आज की मुरली पर सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 28-07-14

शांतिधाम निवासी, शांति के सागर बाबा ने कहा, मीठे बच्चे - इस शरीर को न देख आत्मा को देखो, अपने को आत्मा समझ आत्मा से बात करो, इस अवस्था (देही-अभिमानी अवस्था) को जमाना हैं, यही ऊंची मंजिल हैं.

ज्ञान सागर बाप ने तीन मुख्य बातों का हमें ज्ञान दिया हैं - आत्मा का, परमात्मा का और इस बेहद के सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का. जब हमारी आत्मा शरीर छोड़कर मीठे बाबा के पास परमधाम जायेगी तो इन तीनों में से परमात्मा का और इस बेहद के सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हमारी आत्मा से निकल जायेगा, इस लिए जब हम सतयुग में पहले-पहले पार्ट बजाने आते है तो हमें परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान नहीं रहेगा, लेकिन हम आत्मा हैं, यह ज्ञान जरूर देवी-देवताओं को रहेगा. इस लिए बाबा ने जीतना भी ज्ञान दिया, उसमें से मुख्य हैं स्वयं को आत्मा समझना और अन्य से भी आत्मा समझ के व्यवहार में आना, क्योंकि यही प्रैक्टिस हमें सतयुग में ऊंच पद प्राप्त करायेगी.

बाबा ने आज की मुरली में हम आत्मा है उसकी प्रैक्टिस कराने के लिए, जो महावाक्य उच्चारण कीये उसे ही युज कर हम आत्मा-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करेंगे.

- परमपिता-परमात्मा को ही तुम बच्चे वा आत्मा याद करती हो.

- अपने को आत्मा समझ के दूसरे को भी आत्मा समझें, यह अवस्था जब बच्चों की होगी तो बाबा की याद भी बच्चों को एकरस रहेगी.

- जिस प्रकार तुम बच्चे अपने को आत्मा समझ के बाप को याद करते हो, ऐसे और कोई याद कर नहीं सकते.

- अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है.

- कहते भी है हम भाई-भाई है तो आत्मा को ही देखना चाहिए.

- आत्मा पर मैल चढ़ी हुई है. मुख्य आत्मा की ही बात है. आत्मा ही तमोप्रधान बनी है, जो सतोप्रधान थी - यह आत्मा में ज्ञान है.

- ज्ञान-सागर आत्मा एक परमात्मा को ही कहा जाता है. तुम बच्चों की आत्मा को ज्ञानसागर नहीं कह सकते. ज्ञान-सागर परमात्मा तुम बच्चों की आत्माओं को सारा ज्ञान देते है फिर तुम बच्चों की आत्मा उसे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार धारण करती हो. जो आत्मा इस ज्ञान को अच्छी तरह धारण करती है वही अच्छी सर्विस कर सकती हैं.

- बाबा को ज्ञान-सागर आत्मा कहा जाता है. वह भी आत्मा, तुम भी आत्मायें.

- बाबा की आत्मा तो एवर प्योर है, वैसे तुम आत्माये भी ऐवर प्योर बनेगी. बच्चों की आत्माओं में जब रिंचक मात्र भी अपवित्रता नहीं रहेगी तब बच्चों की आत्माये बाबा के पास चली जायेंगी.

- अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और आत्मा में ज्ञान भी धारण करो.

हमारी आत्मा में आत्मा के ओरिजिनल गुण - शांति, सुख, आनंद, प्रेम, पवित्रता और शक्ति को इमर्ज करने के लिए, नीचे दिये हुए स्वमानो को मनन शक्ति को युज कर प्रैक्टिस करो.

- मैं आत्मा, शांति के सागर का बच्चा, शांत स्वरूप हूँ.

- मैं आत्मा, सुख के सागर का बच्चा, सुख स्वरूप हूँ.

- मैं आत्मा, पवित्रता के सागर का बच्चा, संपूर्ण पवित्र स्वरूप हूँ.

- मैं आत्मा, प्रेम के सागर का बच्चा, प्रेम स्वरूप हूँ.

- मैं आत्मा, आनंद के सागर का बच्चा, आनंद स्वरूप हूँ.

- मैं आत्मा, सर्व-शक्तिवान का बच्चा, मास्टर सर्व-शक्तिवान हूँ.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email:
a.brahmin.soul@gmail.com .